



**NEERAJ®**

# M.E.C. -7

## अन्तराष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त

( International Trade and Finance )

Chapter Wise Reference Book  
Including Many Solved Sample Papers

*Based on*

# I.G.N.O.U.

**& Various Central, State & Other Open Universities**

By: *Payal Jain*, M.Com.



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

*(Publishers of Educational Books)*

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: [info@neerajbooks.com](mailto:info@neerajbooks.com)

Website: [www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

**MRP ₹ 300/-**

## Content

# अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त ( International Trade and Finance )

Question Paper—June-2023 (Solved) .....	1-3
Question Paper—December-2022 (Solved) .....	1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) .....	1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) .....	1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) .....	1-2
Question Paper—June, 2019 ( Solved ) .....	1-2
Question Paper—December, 2018 ( Solved ) .....	1-2
Question Paper—June, 2018 ( Solved ) .....	1-2
Question Paper—December, 2017 ( Solved ) .....	1-2
Question Paper—June, 2017 ( Solved ) .....	1-2

---

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
--------------	-----------------------------------	-------------

---

### अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार : सिद्धान्त ( International Trade: Theory )

1. मुक्त व्यापार सिद्धान्त ( Free Trade Theory ) .....	1
2. व्यापार की वैकल्पिक व्याख्याएँ ( Alternative Explanations of Trade ) .....	9
3. मुक्त व्यापार से लाभ और कल्याण ( Gains from Free Trade and Welfare ) .....	16

### अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार : नीति ( International Trade: Policy )

4. संरक्षणवाद के सिद्धान्त ( Theories of Protectionism ) .....	24
5. व्यापार नीति में विश्व व्यापार संगठन (WTO) की भूमिका .....	36
( Role of the WTO in Trade Policy )	
6. बहुपक्षवाद और विश्व व्यापार संगठन में विकासशील देशों की समस्याएं .....	45
( Multilateralism and Problems of Developing Countries with WTO )	

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
-------	----------------------------	------

**भुगतान संतुलन, भुगतान संतुलन समायोजन, विनिमय दर  
(Balance of Payments, BOP Adjustments, Exchange Rates)**

7. भुगतान सन्तुलन : प्रस्तावना ( Balance of Payments: Introduction ) .....	51
8. अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली और विनिमय दर व्यवस्था ..... (International Monetary System and Exchange Rate Regime)	56
9. अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएँ (International Financial Institutions) .....	66
10. अन्तर्राष्ट्रीय ऋण और वित्तीय संस्थाओं की भूमिका ..... (International Debt and the Role of the Financial Institutions)	71

**भूमण्डलीकरण, व्यापार और विकासशील देश  
( Globalization, Trade and Developing Countries )**

11. व्यापार और विकास ( Trade and Development ) .....	74
12. अपरिष्कृत उत्पादों में व्यापार : मुद्दे ( Trade in Primary Commodities: Issues ) .....	80
13. सेवाओं में व्यापार सम्बन्धी मुद्दे ( Issues on Trade in Services ) .....	86
14. विश्व व्यापार संगठन के अन्तर्गत व्यापार वार्ताएँ : एक ऐतिहासिक दृष्टिपात ..... ( Trade Negotiations under WTO: A Historical View )	92

**क्षेत्रीय ब्लॉकों का सिद्धान्त (Theories of Regional Blocs)**

15. क्षेत्रीय व्यापारिक ब्लॉक ( Regional Trading Blocs ) .....	97
16. अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी गतिशीलता और उदीयमान मौद्रिक प्रणाली ..... ( International Capital Mobility and the Emerging Monetary System )	107

**भारत में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और भुगतान ( Intetrnational Trade and Payaments in India )**

17. भारतीय व्यापार नीति : ऐतिहासिक परिपेक्ष्य और नवीनतम घटनाएँ ..... ( Indian Trade Policy: Historical Perspective and Recent Developments )	114
18. भारत का भुगतान सन्तुलन ( India's Balance of Payments ) .....	131
19. भारत में व्यापार और विकास ( Trade and Development in India ) .....	144

**Sample Preview  
of the  
Solved  
Sample Question  
Papers**

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त  
( International Trade and Finance )

M.E.C.-7

समय : 3 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 100

नोट : प्रत्येक भाग से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

## भाग-क

नोट : इस भाग से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के हेक्सर-ओहलिन प्रतिमान की मुख्य विशेषताओं की संक्षेप में व्याख्या कीजिए। वर्तमान वैश्विक पर्यावरण में इस प्रतिमान का औचित्य ( महत्त्व ) भी समझाइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-7, प्रश्न-1 और पृष्ठ-3, 'हेक्सर ओहलिन प्रमेय और इसका विस्तार', पृष्ठ-8, प्रश्न-5 'वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता'

इसे भी देखें-हेक्सर ओहलिन मॉडल की प्रमुख विशेषताएँ-हेक्सर ओहलिन मॉडल की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. इस मॉडल का विस्तार रिकार्डों की तुलनात्मक लाभ की कार्यपद्धति के सुधार के रूप में किया गया था। इसे स्वीडन के दो अर्थशास्त्रियों एली हेक्सर तथा बटिल ओहलिन द्वारा तैयार किया गया।

2. इस मॉडल के अन्तर्गत अलग-अलग देशों के बीच व्यापार उन देशों के सापेक्षिक घटक अथवा अक्षय निधियों में होने वाले अन्तरों की वजह से होता है।

3. इस प्रमेय में व्यापार के मुख्य घटकों को देश के अन्य घटक जैसे अक्षय निधियों व वस्तुओं घटकता के दृष्टिकोण से मापा जाता है।

4. इस प्रमेय के अन्तर्गत यह बताया जाता है कि किस प्रकार दो देशों के मध्य वस्तुओं के आयात-निर्यात के द्वारा घटक मूल्य समीकरण स्थापित किया जा सकता है।

5. श्रम तथा पूँजी के उत्पादन में इस प्रमेय का प्रयोग अलग-अलग अक्षय निधियों के आधार पर किया जाता है।

प्रश्न 2. वैश्विक बहुपक्षीय व्यापार के नियामक के रूप में WTO ( विश्व व्यापार संगठन ) की भूमिका की जांच कीजिए। संगठन के लिए चिन्ता के प्रमुख मुद्दों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर-बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था में विकासशील देश अनेक प्रकार की समस्याओं का अनुभव करते हैं। परन्तु इन्हें थोड़ा लाभ प्राप्त होता है। परन्तु विकसित देशों को इसमें ज्यादा लाभ प्राप्त होता है क्योंकि यह देश विकासशील देशों का दमन करके इस व्यवस्था का लाभ प्राप्त करते हैं। अतः यहाँ पर विकसित देश प्रायः विकासशील देशों के हितों की उपेक्षा करते हैं। जैसा कि विश्व व्यापार संगठन समझौतों के 5 वर्षों तक 1999 वर्ष के अन्त में विकासशील देशों ने WTO में असन्तुलन व विषमता को दूर करने के लिये 1000 प्रकार के प्रस्तावों का सेट बनाया। जिसमें विकासशील देशों के दमन हेतु कार्य किये गये।

विश्व व्यापार संगठन की बहुराष्ट्रीय संगठन के रूप में कार्यशीलता-विश्व व्यापार संगठन की कार्यप्रणाली मुख्य रूप से विकसित देश ही तय करते हैं। यही देश वार्ताओं में शक्ति प्रदान करते हैं व निर्धारित भी करते हैं। अतः विश्व व्यापार संगठन की कार्यप्रणाली मुख्यतः विकसित देशों में अनुभव तथा प्राथमिकताओं से ही प्रेरणा लेते हैं।

दोहा राउन्ड समझौते की सफलता के गतिरोध में आने वाली कठिनाइयाँ-दोहा राउन्ड समझौते की सफलता के गतिरोध में आने वाली कठिनाइयाँ निम्नलिखित हैं-

1. यहाँ पर यह तय करना सरल नहीं था कि जो वार्ताएँ की गई हैं, वह सन्तुलित हैं अथवा नहीं। अर्थात् अपने उत्तरदायित्वों के स्तरानुसार लाभ की प्राप्ति हुई है या नहीं।

2. दोहा राउन्ड समझौते के कार्यान्वयन में आने वाली लागतों का सही व उचित आंकलन करना कभी सरल नहीं था।

3. वर्ष 2001 में दोहा में विश्व व्यापार संगठन मानियो के सम्मेलन के बाद दोहा वक्र कार्यक्रम में अनुसरण में विश्व व्यापार संगठन के वर्तमान वार्तालाप के विकासशील देशों के विशेष तथा विभेदकारी व्यवहार को उचित रूप प्रदान करने के अध्यादेशों का सही क्रियान्वयन होना भी समस्या का कारण बना। अतः यही मुख्य कारण था, जिसकी वजह से दोहा राउन्ड समझौते को सफलता में कठिनाइयाँ उत्पन्न हुईं।

इसे भी देखें-अध्याय-6, पृष्ठ 47, 'विश्व व्यापार संगठन कार्यप्रणाली और विकासशील देश'

प्रश्न 3. बजट घाटा और सार्वजनिक बाह्य ऋण के संबंध को संक्षेप में परिभाषित कीजिए। बाह्य ऋण के प्रबंधन में IMF की भूमिका की भी व्याख्या कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-73, प्रश्न-5 और प्रश्न-6

प्रश्न 4. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धांत के संदर्भ में निम्न को व्याख्यायित कीजिए-

(क) लियोन्टीफ विरोधाभास

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-8, प्रश्न-7

(ख) उत्पाद जीवन चक्र

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-9, 'उत्पाद चक्र सिद्धांत'

(ग) रेबर्जीसकी प्रमेय

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-8, प्रश्न-6

(घ) व्यापार का गुरुत्वाकर्षण मॉडल

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-14, प्रश्न-6

भाग-ख

नोट : इस भाग से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. आयात शुल्क और आयात कोटा के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। कोटा से अधिक आयात शुल्क को प्राथमिकता देने के लिए आप क्या औचित्य देंगे?

उत्तर-आयात कर और आयात कोटा में अंतर किया जाता है। आयात कर सरकार द्वारा लगाया गया शुल्क होता है, जो विदेशी माल के आयात पर लागू किया जाता है। कोटा एक निर्दिष्ट मात्रा में विदेशी माल के आयात पर प्रतिबंध होता है।

टैरिफ को कोटा की तुलना में प्राथमिकता देने के लिए निम्न आर्थिक तथ्यों का उदाहरण दिया जा सकता है-टैरिफ न्यूनतम मूल्य गारंटी देता है, जो आयातित वस्तुओं के मूल्य को बढ़ा सकता है, जबकि कोटा आयात की मात्रा को सीमित करता है। टैरिफ व्यापारिक संबंधों को स्वतंत्रता देता है, जबकि कोटा आयात पर प्रतिबंध लगाने से आर्थिक संकट उत्पन्न हो सकता है। अतः टैरिफ का उपयोग करके विदेशी व्यापार को संतुलित करने की प्राथमिकता हो सकती है।

प्रश्न 6. विनिमय दर निर्धारण के क्रय शक्ति समता सिद्धांत का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर-क्रय शक्ति समता सिद्धांत (Purchasing Power of Parity) का अर्थ किन्हीं दो देशों के बीच वस्तु या सेवा की कीमत में मौजूद अंतर से है। इससे किसी देश की अर्थव्यवस्था के आकार का पता लगाया जा सकता है। क्रय शक्ति समता (पीपीपी) के जरिए यह पता लगाया जाता है कि दो देशों के बीच मुद्रा की क्रयशक्ति में कितना अंतर या समता है। यह मुद्रा विनिमय दर (करेंसी एक्सचेंज रेट) तय करने में भी भूमिका निभाती है।

सरल शब्दों में कहें तो किसी देश में एक अमेरिकन डॉलर में कोई वस्तु मिलती है, वही वस्तु हमें अपनी देश में कितने रुपये (भारतीय मुद्रा) में मिल रही है। वस्तु की मात्रा और कीमत में जो

भी मौजूद अंतर होगा, उससे हमारे देश की मुद्रा की कीमत तय हो जाएगी। पीपीपी रेट के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आय की तुलना भी की जाती है। किसी देश की गरीबी के स्तर को नापने के लिए पीपीपी एक बेहतर माध्यम है।

क्रय शक्ति समानता की अवधारणा में यह अनुमान लगाने की अनुमति मिलती है कि एक्सचेंज के लिए दोनों देशों की मुद्राओं की खरीद शक्ति के बराबर होने के लिए दो मुद्राओं के बीच विनिमय दर क्या होनी चाहिए। काल्पनिक मुद्रा रूपांतरणों के लिए उस पीपीपी दर का उपयोग करके, एक मुद्रा की एक दी गई राशि में वही क्रय शक्ति होती है, जो सीधे माल की बाजार टोकरी खरीदने के लिए उपयोग की जाती है या पीपीपी दर पर दूसरी मुद्रा में परिवर्तित करने के लिए उपयोग की जाती है और फिर बाजार टोकरी खरीदती है। वह मुद्रा क्रय शक्ति समानता से विनिमय दर के निरीक्षण विचलन को वास्तविक विनिमय दर के विचलन द्वारा 1 के पीपीपी मूल्य से मापा जाता है।

पीपीपी विनिमय दर लागत में मदद करते हैं, लेकिन लाभ को छोड़कर और उपरोक्त देशों के बीच वस्तुओं की विभिन्न गुणवत्ता पर विचार नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि दो देश एक ही भौतिक मात्रा में दो अलग-अलग वर्षों में एक-दूसरे के रूप में उत्पादित करते हैं। चूंकि बाजार विनिमय दर काफी हद तक उतार-चढ़ाव करती है, जब एक देश का सकल घरेलू उत्पाद अपनी मुद्रा में मापा जाता है तो बाजार विनिमय दर का उपयोग करके दूसरे देश की मुद्रा में परिवर्तित हो जाता है, एक देश में एक वर्ष में दूसरे देश की तुलना में अधिक वास्तविक जीडीपी होने का अनुमान लगाया जा सकता है, लेकिन कम अन्य; इन दोनों स्थितियों में उत्पादन अपने सापेक्ष स्तर की वास्तविकता को प्रतिबिंबित करने में असफल रहेगा। लेकिन अगर एक देश का सकल घरेलू उत्पाद दूसरे देश की मुद्रा में परिवर्तित बाजार विनिमय दर के बजाय पीपीपी विनिमय दरों का उपयोग कर परिवर्तित हो जाता है, तो अनुमान गलत नहीं होगा। अनिवार्य रूप से जीडीपी पीपीपी नियंत्रण और मूल्य स्तर की विभिन्न लागतों के लिए नियंत्रण करता है, आमतौर पर संयुक्त राज्य अमेरिका के डॉलर के सापेक्ष, इस प्रकार किसी दिए गए देश के उत्पादन के स्तर का अधिक सटीक चित्रण सक्षम करता है।

प्रश्न 7. संरक्षण की मौद्रिक और प्रभावी दर के बीच अंतर कीजिए। संरक्षण की प्रभावी दर की अवधारणा की उपयोगिता भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-देशों के बीच टैरिफ बाधाओं के प्रभाव का अनुमान लगाना मुश्किल है। स्पष्ट रूप से, जिस तरह से आयात की मांग टैरिफ में बदलाव का जवाब देती है, वह कई कारकों पर निर्भर करेगा। इनमें मूल्य में बदलाव के लिए उत्पादकों और उपभोक्ताओं की प्रतिक्रिया, घरेलू उत्पादन और खपत में आयात की हिस्सेदारी, घरेलू उत्पादों के लिए आयात की प्रतिस्थापन, और इसी तरह शामिल हैं। टैरिफ के स्तर की प्रतिक्रिया देश से देश के साथ-साथ

# Sample Preview of The Chapter

*Published by:*



**NEERAJ  
PUBLICATIONS**

[www.neerajbooks.com](http://www.neerajbooks.com)

# अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त ( International Trade and Finance )

## अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार : सिद्धान्त ( International Trade: Theory )

### मुक्त व्यापार सिद्धान्त ( Free Trade Theory )



#### परिचय

व्यापार नीति-निर्माण के क्षेत्र में व्यापार सिद्धान्तों का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। व्यापार नीति-निर्माण के क्षेत्र में भूमंडलीकरण तथा उदारीकरण के कारण आज अनेक बदलाव आये हैं। यहीं से व्यापार सिद्धान्तों ने भी उच्च स्थान प्राप्त किया है। अतः यहाँ पर यह आवश्यकता महसूस हुई कि सर्वप्रथम क्लासिकल सिद्धान्तों का प्रस्तुतीकरण सरलता से किया जाए व इनके अलग-अलग निर्धारकों को स्पष्ट किया जाए ताकि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से जो भी लाभ प्राप्त हो रहे हैं, उनका महत्व ज्ञात हो। एक सिद्धान्त के कुछ लाभ होते हैं तो उसकी कुछ सीमाएँ भी होती हैं। इसलिए इनके लाभ व सीमाओं के विषय में चिन्तन किया गया है। साथ ही इस अध्याय के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के विशुद्ध सिद्धान्त पूर्ण (निरपेक्ष) लाभ के सिद्धान्त, रिकार्डों के तुलनात्मक लाभ और विकल्प लागत सिद्धान्त व हेक्शर-ओहलिन प्रमेय व इसके विस्तार के विषय में अध्ययन किया गया है।

#### अध्याय का विहंगावलोकन

#### अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का विशुद्ध सिद्धान्त : पूर्ण (निरपेक्ष) लाभ का सिद्धान्त

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के विशुद्ध सिद्धान्त के विषय में एडम स्मिथ ने अपना मत प्रस्तुत करते हुए बताया कि किस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के द्वारा दो देश अपने लाभ अर्जित करते हैं। इसे ही अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का विशुद्ध सिद्धान्त कहा जाता है।

अब अगर इस सिद्धान्त को एक उदाहरणस्वरूप देखा जाए तो (1) माना कि दो वस्तुएँ X, Y हैं, जो सिर्फ श्रम द्वारा ही उत्पादित की जा सकती हैं तथा दो देश हैं S, T जहाँ पर श्रम की इकाइयाँ स्थापित की जायेंगी।

(2) यदि देश S में वस्तु X की एक इकाई बनाने के लिए श्रम की 100 इकाइयाँ लगाई जाती हैं, पर देश T इसी वस्तु के उत्पादन हेतु 200 इकाइयों के द्वारा श्रम की प्रबलता पर बल देता है अथवा देश S 200 इकाइयाँ व देश T 100 इकाइयाँ श्रम लगाता है, तो किस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होगी?

(3) इसके विपरीत देश S एक वस्तु X के उत्पादन में दक्ष है, क्योंकि यहाँ देश T की तुलना में श्रम का प्रयोग प्रति इकाई उत्पादन में कम हो रहा है वहीं दूसरी तरफ देश T वस्तु Y के उत्पादन में ज्यादा दक्ष है।

(4) उपर्युक्त तुलनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आता है कि देश S की वस्तु X के उत्पादन की स्थिति पूर्ण लाभ पर आधारित है तथा देश T वस्तु Y के उत्पादन में पूर्ण लाभ की स्थिति को प्राप्त करता है।

अब यदि इन स्थितियों में कुछ बदलाव लायें, तो

(1) देश T 100 श्रम की इकाइयों के प्रयोग के द्वारा वस्तु Y की एक इकाई का उत्पादन करता है तथा इसे देश S को वस्तु X की एक इकाई के बदले में निर्यात करके ज्यादा लाभ प्राप्त करता है। उदाहरणस्वरूप देश T 100 श्रम की इकाइयों से चाय का उत्पादन कर रहा है तथा S कॉफी का उत्पादन कर रहा है। अब देश T ज्यादा चाय का उत्पादन करके उसे देश S को निर्यात करके अधिक लाभ का अर्जन कर सकता है—अर्थात् देश T ने प्रत्यक्ष



2/NEERAJ : अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त

रूप से X वस्तु की 0.5 इकाई के उत्पादन हेतु 100 श्रम इकाइयों का उपयोग करने की अपेक्षा परोक्ष रूप से X वस्तु की एक इकाई का अतिरिक्त उत्पादन उतनी ही श्रम इकाइयों (100) के प्रयोग से कर लिया।

(2) वहीं दूसरी तरफ देश S ने निर्यात के लिए ही X की एक इकाई के उत्पादन हेतु 100 श्रम इकाइयों का उपयोग किया, जिसके बदले में उसने Y की एक इकाई प्राप्त की, परन्तु यह यदि स्वयं ही Y की एक इकाई के उत्पादन का प्रयास करता, तो इसे श्रम की 200 इकाइयों की जरूरत पड़ती।

इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन के फलस्वरूप यह निष्कर्ष सामने आता है कि देश S व देश T दोनों ही व्यापार करके ज्यादा से ज्यादा वस्तुएँ प्राप्त करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही इनका सहसम्बन्ध भी अति अनिवार्य है।

अतः हम उदाहरण के द्वारा यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि देश S व T दोनों के लाभ का माध्यम अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार है। परन्तु यह लाभ तभी लिया जा सकता है, जबकि दोनों देश अपनी अलग-अलग वस्तु (चाय व कॉफी) के उत्पादन में पूर्ण रूप से दक्ष हों।

**रिकाडों का तुलनात्मक लाभ व विकल्प का लागत सिद्धान्त**

रिकाडों ने अपने सिद्धान्त को एडम स्मिथ के पूर्ण लाभ के ढांचे के सिद्धान्त से अलग रूप में प्रदर्शित किया। डेविड रिकाडों ने बताया कि प्रत्येक वस्तु के उत्पादन में एक देश की तुलना में दूसरे देश के पूर्ण लाभ की स्थिति में होने पर किस प्रकार दो देश व्यापार के द्वारा लाभ प्राप्त करते हैं। यहाँ पर मुख्य प्रश्न यह है कि जब यह स्थिति उत्पन्न होगी, जिसमें S देश T की तुलना में हर वस्तु का उत्पादन कम श्रम लागत पर करता है, तो क्या दोनों देशों S व T को व्यापार से लाभ प्राप्त हो पायेगा, यदि हो पायेगा तो यह किस प्रकार संभव है?

अतः इसे समझने हेतु रिकाडों के तुलनात्मक लाभ के सिद्धान्त को समझना अति अनिवार्य है।

डेविड रिकाडों ने अपने सिद्धान्त को दो देशों के माध्यम से स्पष्ट किया है। ये दो देश इंग्लैण्ड तथा पुर्तगाल थे। ये देश दो प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करते थे, जो मदिरा व वस्त्र थे। यहाँ पुर्तगाल के द्वारा वस्त्र के साथ-साथ मदिरा के उत्पादन में भी श्रम की इकाइयों का प्रयोग किया जाता है, जिसे निम्न प्रदत्त तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

श्रम व विकल्प लागत

देश	उत्पादन की श्रम लागत (घंटों में)		उत्पादन की विकल्प लागत	
	वस्त्र की एक इकाई	मदिरा की एक इकाई	वस्त्र की एक इकाई	मदिरा की एक इकाई
पुर्तगाल	90	80	$90/80 = 1.12$ इकाई	$80/90 = 0.89$ इकाई

उपर्युक्त तालिका के अनुसार पुर्तगाल जिसे हम देश S मान लेते हैं, यह वस्त्र की एक इकाई को 90 घंटे के श्रम के द्वारा तैयार करता है तथा मदिरा की एक इकाई को 80 घंटे की श्रम इकाई के द्वारा तैयार करता है अर्थात् इसका मुख्य कार्य तो वस्त्र तैयार करना है, परन्तु यह मदिरा पर भी श्रम लगाकर निर्यात हेतु मदिरा की भी 0.89 इकाई तैयार कर लेता है। इसके लिए पुर्तगाल 80 घंटे के श्रम की लागत को व्यय करता है। इस तरह स्पष्ट है कि पुर्तगाल वस्त्र

व मदिरा दोनों के ही उत्पादन में पूर्ण लाभ की स्थिति में है। क्योंकि यह 80 घंटे का श्रम मदिरा उत्पादन व 90 घंटे का श्रम वस्त्र उत्पादन में लगा रहा है, जो तुलनात्मक रूप में कम है। (यहाँ हम इंग्लैण्ड के तुलनात्मक रूप के विषय में बात कर रहे हैं, जो कि अग्रिम तालिका में स्पष्ट है।)

अब यदि इंग्लैण्ड की बात करें, तो इंग्लैण्ड की उत्पादन व श्रम लागत निम्न प्रदत्त तालिका द्वारा स्पष्ट है—

श्रम व विकल्प लागत

देश	उत्पादन की श्रम लागत (घंटों में)		उत्पादन की विकल्प लागत	
	वस्त्र की एक इकाई	मदिरा की एक इकाई	वस्त्र की एक इकाई	मदिरा की एक इकाई
इंग्लैण्ड	100	120	$100/120 = 0.83$	$120/100 = 1.2$

इंग्लैण्ड जिसे कि हम देश T मान लेते हैं, यह 100 घंटों की श्रम लागत वस्त्र की एक इकाई बनाने में तथा 120 घंटों की श्रम लागत मदिरा की एक इकाई बनाने में लगाता है, जिसके फलस्वरूप इसे 0.83 वस्त्र की एक इकाई तथा 1.2 मदिरा की एक इकाई प्राप्त होती है अर्थात् देश T भी दोनों वस्तुओं पर श्रम लागत लगाकर इकाइयों प्राप्ति में सक्षम है।

परन्तु यहाँ मुख्य प्रश्न यह है कि क्या दोनों देशों को व्यापार के द्वारा लाभ प्राप्त होगा? तो उत्तर है कि वास्तव में इंग्लैण्ड व पुर्तगाल दोनों को लाभ की प्राप्ति होगी, परन्तु जब यहाँ तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो निम्नलिखित अवधारणाएँ हमारे समक्ष उत्पन्न होंगी—

- (a) वस्तु A (वस्त्र) की विकल्प लागत को वस्तु B की राशि के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसे वस्तु A की अतिरिक्त इकाई के उत्पादन हेतु छोड़ना पड़ेगा।
- (b) तालिकाओं से यह तथ्य स्पष्ट है कि इंग्लैण्ड व पुर्तगाल में वस्त्र व मदिरा का उत्पादन इस प्रकार हो रहा है कि एक देश दूसरे को निर्यात करना चाहे, तो आसानी से कर सकता है।
- (c) अब यदि और अधिक स्पष्ट रूप से देखें तो यह तथ्य स्पष्ट है कि मदिरा का उत्पादन करने में दोनों देशों की तुलना में पुर्तगाल की विकल्प लागत थोड़ी कम है। (इंग्लैण्ड में मदिरा 1.2 इकाई उत्पादित हो रही है, जबकि पुर्तगाल में 0.89 इकाई) तथा वस्त्र उत्पादन में इंग्लैण्ड की विकल्प लागत कम है (अर्थात् पुर्तगाल 1.12 व इंग्लैण्ड 0.89 इकाई वस्त्र उत्पादित कर रहा है। इस प्रकार इंग्लैण्ड में मदिरा अधिक उत्पादित होती है व पुर्तगाल में वस्त्र अधिक उत्पादित होता है इसलिए पुर्तगाल को मदिरा के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ है, क्योंकि पुर्तगाल 80 घंटे लगाकर 0.89 इकाई मदिरा उत्पादित कर रहा है, जबकि इंग्लैण्ड 120 घंटे में 1.2 इकाई उत्पादित कर रहा है। यह 40 घंटे का तुलनात्मक अन्तर है, परन्तु इकाई उस दर से नहीं बढ़ रही है। वहीं दूसरी तरफ इंग्लैण्ड को वस्त्र के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ है, क्योंकि इंग्लैण्ड 100 इकाई श्रम से 0.83 इकाई वस्त्र प्राप्त कर रहा है, जबकि पुर्तगाल 90 इकाई श्रम से 1.12 इकाई वस्त्र प्राप्त कर रहा है, जो तुलनात्मक रूप से अधिक उच्च नहीं है।
- (d) इस प्रकार दोनों देशों को दूसरे देश से उस वस्तु का निर्यात करना चाहिए, जिससे उन्हें तुलनात्मक लाभ प्राप्त हो।

यहाँ पर हम तुलनात्मक लाभ की बात कर रहे हैं, तो यह जानना अनिवार्य कि तुलनात्मक लाभ क्या है?

तुलनात्मक लाभ वह है, जब एक देश को वस्तु के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ प्राप्त हो रहा है तथा उस वस्तु के उत्पादन की विकल्प लागत दूसरे देश की तुलना में उस देश में कम है। यह तुलनात्मक लाभ प्रायः प्रौद्योगिकीय अन्तर के कारण होता है।

### हेक्शर-ओहलिन प्रमेय और इसका विस्तार

रिकाडो ने अपनी कार्यपद्धति के अन्तर्गत जिस तुलनात्मक लाभ की व्याख्या की है, वह मुख्यतः श्रम आधारित थी, जबकि तुलनात्मक लाभ मुख्यतः प्रौद्योगिकी अन्तरों के माध्यम से भी निर्धारित होता है।

हेक्शर तथा ओहलिन प्रमेय का विस्तार मुख्यतः रिकाडो की तुलनात्मक लाभ की कार्यपद्धति के सुधार हेतु किया गया है इस प्रमेय की संकल्पना सर्वप्रथम स्वीडन के दो अर्थशास्त्रियों एली हेक्शर तथा बर्टिल ओहलिन ने तैयार की थी। इनकी संकल्पना को पॉल सैमुएलसन तथा रोनाल्ड जोन्स ने और अधिक विकसित

किया इसलिए इस मॉडल को हेक्शर-ओहलिन-सैमुएलसन मॉडल भी कहा जाता है।

इस मॉडल के अन्तर्गत बताया गया है कि अलग-अलग देशों के मध्य व्यापार उन देशों के सापेक्षिक घटक व अक्षय निधियों में होने वाले अन्तरों के कारण होता है। इसे दीर्घकालीन सामान्य सन्तुलन का सिद्धान्त भी कहा जाता है। इसमें दो सेक्टरों के मध्य दो घटक चलते हैं। इस तरह हेक्शर-ओहलिन कार्य-प्रणाली घटक अनुपातों की दृष्टि से यह व्यापार के निर्धारकों पर प्रकाश डालता है। इसके अलावा इस प्रमेय के द्वारा घटक उपयोग व घटक प्रतिफल पर व्यापार के प्रभावों की अन्तर्दृष्टि भी प्रदान की जाती है। अतः हेक्शर-ओहलिन-सैमुएलसन मॉडल द्वारा यह बताया जाता है कि किस प्रकार दो देशों के मध्य वस्तुओं के आयात निर्यात के द्वारा घटक मूल्य समीकरण स्थापित किया जा सकता है।

हेक्शर-ओहलिन (एच.ओ) प्रमेय को चार भागों में विभक्त किया गया है—

- (1) हेक्शर-ओहलिन प्रमेय।
- (2) स्टोलपर-सैमुएलसन प्रमेय।
- (3) घटक-मूल्य समीकरण प्रमेय।
- (4) रिब्जिन्सकी प्रमेय।

**हेक्शर-ओहलिन (एच-ओ) प्रमेय**—इस प्रमेय के अन्तर्गत व्यापार के मुख्य घटकों को देश के अन्य घटक; जैसे—अक्षय निधियों तथा वस्तुओं की घटकता के दृष्टिकोण से मापा जाता है। एक देश जब किसी प्रमुख वस्तु के निर्माण में महारत हासिल करता है, तो यही उस देश की मुख्य विशेषता बन जाती है व इस वस्तु के निर्माण से ही वह देश अपनी विशिष्ट वस्तुओं का निर्यात करता है। इससे सर्वाधिक प्रचुर घटकों का प्रयोग गहनतापूर्वक किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप, एक देश को श्रम में महारत/विशेषज्ञता प्राप्त है, तो वह श्रम प्रधान वस्तुओं का निर्माण कर उन्हें पूँजी प्रधान देशों में निर्यात करेगा ताकि श्रम प्रधान देशों में पूँजी प्राप्ति हो। अर्थात् एक घटक के बदले में उतने ही अनुपात में दूसरा घटक प्राप्त किया जाना ही इस मॉडल (प्रमेय) को अनुवांशिकता का नाम प्रदान करता है अर्थात् 'घटक समानुपात मॉडल'। इस मॉडल में श्रम व पूँजी की तुलना एक समानुपाती रूप में की गई है, क्योंकि जब दो देश अलग-अलग वस्तुओं का उत्पादन करते हैं, तो पूँजी श्रम अनुपात भी अलग-अलग होता है।

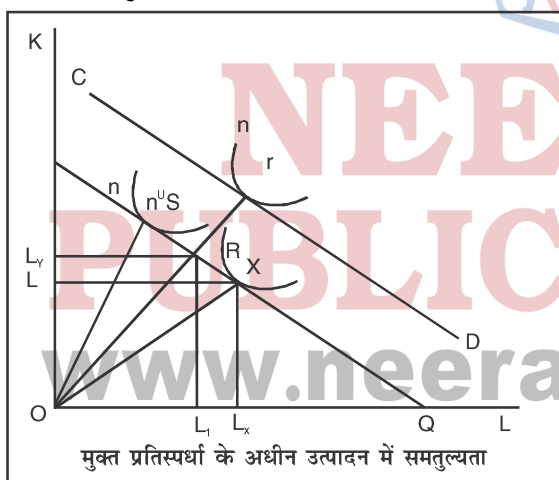
इस प्रमेय की सफलता हेतु यह ध्यान रखना अति अनिवार्य है कि देश में किस उद्योग में श्रम व पूँजी का अनुपात अधिक है। जैसे एक देश वस्त्र तथा कागज का उद्योग करता है तथा वह वस्त्र उत्पादन की अपेक्षा कागज उत्पादन में प्रति श्रम इकाई अधिक पूँजी लगाता है, तो कहा जाता है कि कागज उत्पादन वस्त्र उत्पादन के सापेक्षिक पूँजी गहन है तथा कागज उत्पादन पूँजी गहन होने से वस्त्र उत्पादन सदैव श्रम गहन होगा।

श्रम व पूँजी का उत्पादन में प्रयोग अलग-अलग अक्षय निधियों के आधार पर किया जाता है, क्योंकि कुछ देश श्रम प्रधान होते हैं तथा कुछ देश पूँजी प्रधान। अतः देशों के मध्य सापेक्षिक

4/NEERAJ : अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त

घटक प्रचुरता की परिभाषा व तुलना करने हेतु श्रम की कुछ अक्षय निधियों की तुलना में पूँजी की कुल अक्षय निधियों के अनुपात का प्रयोग किया जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे कुछ देशों में श्रम बल की तुलना में भौतिक पूँजी की मात्रा अधिक पाई जाती है। इसके ठीक विपरीत कई कम व अल्प विकसित देशों में भौतिक पूँजी की कमी पाई जाती है, परन्तु यहाँ पर प्रचुर मात्रा में श्रम पाया जाता है। अतः यहाँ पर श्रम प्रधान वस्तुओं के निर्माण पर अधिक बल दिया जाता है। इस प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका में भारत की तुलना में श्रम की प्रति इकाई की अपेक्षा कुल पूँजी का अनुपात अधिक है, तो यहाँ हम कहेंगे कि यू.एस. में भारत की तुलना में पूँजी प्रचुरता है। अतः भारत में पूँजी की प्रति इकाई की तुलना में श्रम का अनुपात ज्यादा होगा व भारत में यू.एस. के तुलना में श्रम प्रचुरता अधिक होगी।

एच-ओ मॉडल की एक अवधारणा यह भी है कि जब अन्य देश अपने सापेक्षिक घटक अर्थात् अक्षय निधियों की दृष्टि से अलग होते हैं, व अलग-अलग अनुपात में घटकों का प्रयोग करते हैं, तो कीमतों, मजदूरी तथा लगान अर्थात् घटक मूल्य पर उचित प्रभाव डालते हुए लाभदायक व्यापार किया जाता है।



चित्र के अनुसार हम तुलनात्मक लाभ की निम्नलिखित अवधारणाओं को ज्ञात कर सकते हैं—

(1) भिन्न-भिन्न प्रकार के तरीकों से दो वस्तुएँ X तथा Y उत्पादित की जा रही हैं। अतः यहाँ पर हमें संभव साम्य की अवस्था (Equilibrium) ज्ञात करनी है।

(2) चित्र में R व S बिन्दु पर उत्पादन के विभिन्न घटक जैसे श्रम, पूँजी व कच्चा माल आदि दर्शाए जा रहे हैं। इन घटकों के द्वारा X का  $X_1$  तथा  $Y_1$  का द्वारा विनिर्दिष्ट मात्राएँ दिए गए उत्पादन मूल्यों पर न्यूनतम संभव लागत पर उत्पादित की जा रही हैं।

(3) R व S बिन्दु पर दो सममात्रा न्यूनतम संभव समलागत रेखा को स्पर्श करती हैं। यह रेखा उतनी ही तिरछी है, जितनी AB अर्थात् घटक मूल्य अनुपात रेखा।

(4) रेखा AB की ढाल इस बात का अनुसरण करती है कि पूँजी के सीमान्त उत्पाद की तुलना में श्रम के सीमान्त उत्पाद का अनुपात सदैव दोनों ही उत्पादों के बराबर रहता है। साथ ही यहाँ पर दोनों उत्पादों पर पूँजी पर प्रतिलाभ की तुलना में मजदूरी दर अधिक आनुपातिक है।

(5) यहाँ पर R तथा T बिन्दु एक अतिरिक्त संभव साम्य की दशा दर्शाई गई है। जहाँ पर दोबारा R बिन्दु पर X बिन्दु सममात्रा की ढाल तथा T बिन्दु पर Y बिन्दु की सममात्रा की ढाल को बराबर करके साम्य बिन्दु बनाया गया है। ये दोनों ही घटक आनुपातिक हैं।

(6) यदि सूक्ष्म अर्थशास्त्र की दृष्टि से देखा जाए, तो एक उत्पादक जिसके पास उचित घटक हैं व वह एक उत्पादक मूल्य स्थापित करता है। यह उत्पादक मूल्य उस बिन्दु पर जहाँ कि हर घटक (श्रम, पूँजी, उत्पादन सम्बन्धी अन्य सामग्री) के सीमान्त उत्पाद के मूल्य घटक के मूल्य के बराबर हैं, यहाँ पर घटकों को खरीदकर अपने लाभ को अधिक करता है।

(7) प्रत्येक उत्पादक बीजगणितीय दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए सदैव श्रम व पूँजी के सीमान्त मूल्य अर्थात् Values व कीमत अर्थात् Price तय करता है। अब यदि यहाँ पर उत्पादों को ABC तथा DEF का प्रयोग करके दर्शाया जाता है, तो यहाँ P (Price) कीमत है, W (Wages) मजदूरी है तथा R (Return) पूँजी पर प्राप्त होने वाले प्रतिलाभ हैं।  $ABC_Y P_Y = W$  व  $DEF_Y P_Y = R$  है। इन्हें सरलता से दर्शाया जा सकता है। इसमें यह तथ्य बताए जाते हैं कि लाभ को ज्यादा करने व अधिकतम सीमा तक लाने हेतु उत्पादक पूँजी व श्रम को किस प्रकार सम्मिश्रित किया जाए, जिससे कि

$$\frac{ABC_Y P_Y}{DEF_Y P_Y} = \frac{W}{R} \text{ अथवा } \frac{ABC_Y}{DEF_Y} = \frac{W}{R} \text{ का सम्मिश्रण प्राप्त हो सके।}$$

(8) अब अगर उत्पादक यह मानता है कि बिन्दु S की जगह पर वह बिन्दु U पर मुख्य रूप से वस्तु Y का उत्पादन करता है, तो वह तो वह ज्यादा लाभ नहीं कमा पाएगा।

(9) जब उत्पादक Y वस्तु का उत्पादन करता है, तो बिन्दु U पर पूँजी की सीमान्त उत्पादकता बिन्दु S पर पूँजी की सीमान्त उत्पादकता से निम्न है। इस कारण बिन्दु U पर Y का उत्पादन किया जाए, तो पूँजी का सीमान्त उत्पाद का मूल्य भी पूँजी की इकाई की लागत की तुलना में निम्न है। इसलिए U बिन्दु पर श्रम का सीमान्त उत्पाद, श्रम की लागत की तुलना में ज्यादा है। अगर श्रम का प्रयोग ज्यादा किया जाएगा तथा पूँजी कम लगाई जाएगी, तो लाभ में वृद्धि तो होगी, साथ ही पूँजी श्रम अनुपात का भी हास होगा। इससे हम S या T बिन्दु की दिशा तक बढ़ेंगे।

अब अगर किसी भी कारण से घटकों के मूल्य में परिवर्तन होता है, तो घटक की सघनता में भी परिवर्तन आ जाएगा।

(10) यदि पूँजी के मूल्य की तुलना में श्रम के मूल्य में वृद्धि होगी, तो उत्पादन की दोनों रेखाओं में उत्पादन में ज्यादा पूँजी लगने